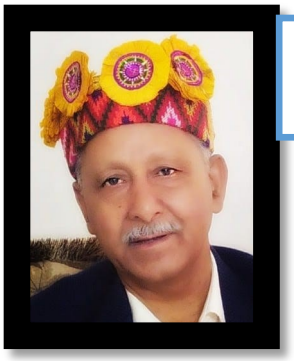

शेर सिंह

कुल्लू
हिमाचल प्रदेश

मध्यस्थता

‘ **थोड़ी** के लिए मेरे साथ चलेंगे?” कृष्ण ने मनोहर के पास आकर पूछा । कृष्ण मनोहर के मकान मालिक का दामाद है । उनकी छोटी बेटी रेशमु का पति ।

‘ क्यों... कोई बहुत जरूरी काम है ?” मनोहर ने जानना चाहा ।

‘ जरूरी ही समझो...”

‘ कहीं दूर... या नजदीक ही जाना है ?”

‘ बस... यहीं ससुराल तक ।”

‘ ससुराल तक ? इस समय... रात के नौ बज रहे हैं ?” मनोहर को आश्चर्य हो रहा था । इतनी रात को वह उसे अपने ससुराल को क्यों ले जाना चाह रहा है

‘ हां...”

‘भई ! ऐसा क्या काम पड़ गया ? मुझे भी इस समय आपके साथ ही चलना है ... आपकी मिसेज को भी मैंने आज वहीं देखा था ।”

‘ वही तो... उसके पास ही जाना है ।”

‘ आप अपनी पत्नी के पास जा रहे हो । मेरा क्या काम है ?”

‘ काम तो है... इसलिए साथ चलने के लिए कह रहा हूं ।”

‘ आखिर बात क्या है ? इतनी रात गए मुझे वहां साथ ले जाने की नौबत आ गई ?” मनोहर को वाकई में हैरानी और जिज्ञासा दोनों हो रही थी ।

‘ क्या कहूं ... मेरी घरवाली रूठ कर आई हुई है ।”

‘ क्या ? रूठ कर ! भई... मुझे तो इसका कोई पता नहीं ।”

‘ आपको कैसे पता होगा ? किसी ने आपको बताया थोड़े ही।”

‘ हां ! यह तो है ।”

‘ वैसे... क्या बात हो गई ?” मनोहर ने तह तक जाने की कोशिश की ।

‘ अब क्या बताऊं... मैं कुछ दूसरे तरह के काम करता हूं । आप इसे दो नंबर का काम भी कह सकते हैं ।” कृष्ण ने छोटे से इन दो शब्दों ‘नंबर दो” को इतनी सरलता और सहजता से ऐसे बताया, मानो चाय- कॉफी, सिगरेट पीने या पान खाने की बात कर रहा हो !

नंबर दो का काम सुन मनोहर को अधिक आश्चर्य नहीं हुआ । उसे उसकी गतिविधियों का कुछ- कुछ अंदेशा, अन्दाजा तो था । लेकिन सच्चाई ठीक से नहीं जानता था । कृष्ण पैंतीस वर्ष के आस- पास का नौजवान था । लंबा- चौड़ा गठीला शरीर । मनोहर उससे चार- पांच साल छोटा ही होगा । कृष्ण अर्ध शिक्षित था, और बेरोजगार भी । लेकिन खेती- बाड़ी का काम था उसका । वह विवाहित था । जबकि मनोहर अब तक विवाह बंधन में नहीं बंधा था । वह स्कूल अध्यापक के रूप में इस गांव की पाठशाला में नौकरी लगने पर यहां आया हुआ था ।

‘ हां... नंबर दो का धन्धा । इसके बिना गुजारा भी तो नहीं हो रहा है । शरीफ बनकर जीना तो आज कल बहुत मुश्किल है ।”

‘ यह सब तो ठीक है । पर... यह नंबर दो का क्या माजरा है ?” मनोहर को इस गुत्थी को जानने की उत्कट जिज्ञासा हुई । उसके जेहन में तुरंत विचार आया । शायद कोई चरस, अफीम, गांजा या स्मैक का मामला हो ? या कुछ और ? जिस प्रकार आस- पास का माहौल था, ऐसे में कुछ भी संभव था ।

दोनों मनोहर के कमरे में उसकी चारपाई पर आमने -सामने बैठे थे । कमरे में केवल वे दो ही थे । कृष्ण मिनट- मिनट बाद लहक कर अपना हाथ आगे बढ़ा देता था । मनोहर उसके बढ़े हाथ को अपने हाथों में थाम लेता । जाहिर था, कृष्ण दारू के नशे में था । जब दोनों एक -दूसरे के हाथ थामते, तो मनोहर के नथुनों से शराब की तीखी गंध टकरा जाती । लेकिन वह बड़ी कुशलता से अपने मन के भावों को छिपाते हुए चेहरे पर प्रकट नहीं होने दे रहा था । वह भी उसी गर्मजोशी से कृष्ण से बातें करता जा रहा था । ‘ आप समझे नहीं ! हम दारू निकालते हैं... मतलब कच्ची शराब । नीचे बाजार में हाथों हाथ उड़ जाती है ।” कृष्ण ने नशे की झोंक में बिना किसी लाग- लपेट, घुमाव- छिपाव के सच्ची बात कह दी थी । कहते हैं न, आदमी जब नशे में हो, तो अपने दिल की बात बता ही देता है । कृष्ण ने एक तरह से इसे सिद्ध कर ही दिया था ।

छल- छद्म से दूर । चालाकी, कुटीलता कहीं लेशमात्र भी नहीं । सीधा- सपाट स्वीकारोक्ति थी ।

' अच्छा...!" मनोहर ने आश्चर्य व्यक्त करने की भरसक कोशिश की । पर उसे स्वयं को महसूस हुआ कि उसके चेहरे पर आश्चर्य के भाव उभरे ही नहीं हैं ।

' हां... बिना इसके गुजारा ही नहीं । बाल बच्चों को पालना भी जरूरी है । आप शायद नहीं जानते... इस या हमारे गांव में हमारे बराबर कोई गरीब नहीं है । हम ही सबसे गरीब हैं । खेती- बाड़ी से रोटी पानी का गुजारा हो भी जाए... तो कपड़े- झिकड़े, लूण तेल लेना जरूरी है न ?" लोग अपना बड़प्पन, अपनी अमीरी, अपनी हैसीयत, ऊपरी शान बघारते हैं । झूठा दिखावा करने में कोई कसर नहीं छोड़ते हैं । लेकिन कृष्ण तो बिना किसी शरम या हीन भावना से अपनी गरीबी, अपनी दरिद्रता, अपनी औकात के बारे नि:संकोच बता रहा था । निश्छल मन की सहज अभिव्यक्ति थी । यह बहुत बड़ी बात थी । लोग तो अपनी तारीफ, अपनी बड़ाई, झूठी शान की आत्म प्रशंसा के पुल कैसे- कैसे बांधते हैं ! बेशक वह दमड़ी का सेठ ही क्यों न हो ।

' पर इस में आपकी घरवाली के रूठने की क्या बात है ?"

' बात है न... तभी तो..."

' क्या भला ?"

'वहीं जाकर पता चलेगा । मुझे भी ठीक से पता नहीं है ।" जहां संवाद खत्म, वहां विवाद शुरू ।

' मुझे तो इन बातों का अनुभव नहीं । फिर मैं वहां जाकर क्या करूंगा ?" मनोहर ने अपनी तरफ से बचने की पूरी कोशिश की ।

' करना... वरना कुछ नहीं है । सिर्फ मेरे साथ चलना भर है ।"

' मैं... मैं..." मनोहर को कुछ नहीं सूझा । न कोई बहाना, इंकार करते बना ।

' मैं... मैं कुछ नहीं... ऐसी कोई बड़ी बात नहीं है ।" कृष्ण ने मनोहर के हाथ को अपने हाथ में थामते हुए कहा । अपनी ओर से आना -कानी की कोशिश के बावजूद, मजबूरन उसे उठना ही पड़ा । वह इस गांव में नया है । काफी बड़ा गांव है । उसे आए साल भर ही हुआ है । जिस घर में क्वार्टर लिया है, वह कृष्ण के ससुर का है । कृष्ण अक्सर अपने ससुराल को आता रहता है । मनोहर से उसकी काफी घनिष्टता हो गई है ।

दोनों आपस में हंसी- ठठा, मजाक -उफंग भी कर लेते हैं । काफी बेतकल्लुफ हो चुके हैं । परन्तु मनोहर फिर भी संस्कारवश उससे तू तड़ाक से बात नहीं करता है । इसी से कृष्ण उसे बहुत मानता है ।

' सो गए...?" आगे- आगे मनोहर चल रहा था । खुले आंगन के दूसरी ओर मकान मालिक के ऊपरी मंजिल के दरवाजे पर पहुंचे, तो खड़ा होकर उसने अंदर की तरफ आवाज़ लगाई । जब तक दरवाजा खुलता, बाहर तख्ते लगे बरामदे में बैठे कुत्ते ने उसके हाथ को चाटना शुरु कर दिया था । दरवाजा थोड़ी देर बाद ही खुला । दरवाजे के दोनों पट थामे घर की बहू खड़ी थी । उसकी गोद अभी तक खाली थी । उसने दोनों को देखा, तो किनारे हट गई । दोनों अंदर आकर फर्श पर बिछी दरी पर पालथी मारकर बैठ गए । मनोहर ने अपनी नज़रें चारों ओर दौड़ाई । घर की महिलाएं हल्के पीले रंग की चिकनी मिट्टी से पुती, लकड़ी और पत्थर की मजबूत दीवारों के साथ अपनी पीठ टिकाए, सोती सी जाग रही थीं । कमरे की सीलिंग चूल्हे में लकड़ी जलाने के कारण धुएं से काली पड़ गई थी । लेकिन सब उन दोनों के बैठने पर अब ठीक से उठ कर बैठ गईं । केवल कृष्ण की पत्नी अधलेटी सी, वैसे ही पड़ी रही ।

'आप लोगों को नींद आ रही होगी ?" मनोहर ने बात शुरु करने के उद्देश्य से कहा । गांवों में वैसे भी अक्तूबर -नवंबर महीनों में रात नौ बजे का समय बहुत ज्यादा हुआ लगता है ।

' नींद तो आ रही थी ।पर आपने कैसे कष्ट किया ?" महिलाओं में से कृष्ण की सास ने पूछा ।

' यूं ही... जरा इनके साथ आ गया । मैंने सोचा... थोड़ी देर बैठ लेते हैं । अंकल खुद दिखाई नहीं दे रहे हैं ?" ' वे दूसरे कमरे में सो रहे हैं ।"

' जरा उनको जगाने का कष्ट करेंगे ?" मनोहर ने घर की बहू से कहा । वह उठकर बाहर को चली गई । बाहर से कुछ बातचीत की आवाज़ें आईं । फिर खामोशी छा गई ।

' आ गए ?" बहू के वापस कमरे में प्रवेश करने पर मनोहर ने पूछा ।

' हां.. आ रहे हैं ।" बहू ने संक्षिप्त सा जवाब दिया । कमरे में कुछ देर सन्नाटा छाया रहा । 'और सुनाओ जी ..." कमरे की जड़ खामोशी कृष्ण के ससुर के इस संबोधन से टूटी । यह उनका किसी का हाल- चाल पूछने का तकिया कलाम था । वे पैंसठ वर्ष के आस- पास के थे ।

चेहरे पर बेतरतीब उगी सफेद दाढ़ी । नीचे वाली दंतपंक्ति से एक दांत भी गायब था । कृष्ण ने उनके बैठने से पूर्व खड़े होकर उनके चरण स्पर्श कर लिए थे ।

‘ आईये अंकल जी ! माफ करना आपको नींद से जगा दिया ।”

‘खैर... कोई खास बात ?” उन्होंने मनोहर और अपने दामाद की ओर देखते हुए पूछा ।

‘ नहीं... खास बात तो नहीं ! इन्होंने कहा... चलो थोड़ी देर बैठते हैं । मैं भी चला आया ।” उसने कृष्ण की ओर संकेत करते हुए तनिक मुस्कराते हुए कहा । कुछ क्षण के लिए फिर मौन व्याप्त हो गया । कुछ क्षण कोई कुछ नहीं बोला । एक- दूसरे को देखने के बाद सबने अपनी निगाहें नीची कर खामोशी अख्तियार कर ली थी ।

‘ वैसे क्या बात हुई थी ?” पहल मनोहर की ओर से ही हुई । उसने थाह लेने की कोशिश की ।

‘ इन्हीं से पूछो न... हमें तो खुद पता नहीं ।” कृष्ण के ससुर ने कहा ।

‘ बात तो कुछ भी नहीं । यह ऐसे ही गुस्से हो कर आई है ।” यह कृष्ण था ।

‘ भई ! हमें तो जब तक असली बात का पता न हो... क्या कह सकते हैं ।”

‘ रेशमु... ओ रेशमु ! उठ बेटी ।” बाप ने अपनी बेटी रेशमु को उठाना चाहा । वह आधी लेटी, आधी बैठी सी दीवार का सहारा लिए उठती सी लेटी रही । लेकिन अब उसने अपना मुंह सब की ओर कर लिया था । मध्यम रोशनी में झाईयों से भरा उसका सूखा चेहरा, उदास -उदास सा लग रहा था । वह कृष्ण से बड़ी लग रही थी, हालांकि उससे छोटी थी । बच्चे दिखाई नहीं दे रहे थे ।शायद सो गए थे ।

‘ ये आपको लेने आए हैं ।” मनोहर ने सीधे रेशमु की ओर देखते हुए ठहरे, मगर अपने स्वर को यथासंभव मुलायम बनाते हुए कहा ।

‘ नहीं... मैं नहीं जाती !” रेशमु की आवाज़ में अभी भी कुछ गुस्सा भरा हुआ था ।

‘ देखो बहन ! गृहस्थी में कभी तू- तू, मैं -मैं हो ही जाती है । इसे अधिक गंभीरता से नहीं लेना चाहिए ।”

‘ इनको पूछो न... ये मुझे इतना क्यों सताते हैं ?” अब वह तहजीब से बात कर रही थी । यहां की औरतें तू तड़ाक से कम ही बात करती हैं । यह पहाड़ी गांवों, पहाड़ी लोगों के संस्कारों-

संस्कृति की खास विशेषता थी ।

‘ यह तो हम नहीं जानते हैं । लेकिन असली बात क्या हुई थी ?”

‘ ये तीन- तीन... चार- चार दिन घर को ही नहीं आते हैं । रोज शराब पीकर ताश खेलने बैठ जाते हैं । मैं शराब निकाल निकालकर भेजती हूं । ये कभी आधे... कभी पूरे पैसे जुए में लगा देते हैं । फिर हार जाते हैं । यह एक दो दिन की बात नहीं । रोज रोज ही ऐसा होता है । घर का सब काम मेरे सिर पर है । बच्चे... पशु... डंगर अलग से देखने पड़ते हैं । ये बाजार जाकर सिर्फ जुआरी बने... पैसे फूंकते रहते हैं ।” कृष्ण की पत्नी ने रुआंसी आवाज़ में अपने मन का सारा गुब्बार निकाल दिया था । उसकी आंखें भी बरसने- बरसने को हो गई थी ।

‘ अच्छा ठीक है... अब मैं जुआ नहीं खेलूंगा । पर... तुझे भी मेरी बात माननी पड़ेगी । तू शराब बंद कर... मैं जुआ बंद करता हूं ।” कृष्ण ने कहा ।

‘ खा कसम...” रेशमु कसम दे रही थी ।

‘ मैं कसम खाने को तैयार हूं ।”

‘ ऐसे नहीं... बच्चों की कसम खाओ ।” मियां- बीवी अपनी –अपनी भड़ास निकालने लग पड़े थे । कमरे में मौजूद सभी लोग चुपचाप उन दोनों को ही देख रहे थे । दोनों में बहस- मुबहिसा चल पड़ी थी । तर्क- वितर्क शुरु हो गए थे । दोनों की आवाज़ कभी धीमी, कभी तेज हो जाती थी ।

‘ देखो... जंवाई जब कह रहे हैं... जुआ नहीं खेलूंगा... तो शराब को बीच में क्यों लाते हैं ?” रेशमु के बुजुर्ग पिता ने कहा ।

‘ नहीं... जब शराब पीयेगे... तो जुआ भी खेलेंगे । मैं क्या इनको जानती नहीं हूं ?”

‘ नहीं... देखो न... दारु सिर्फ हम या तुम ही नहीं निकालते । सारा इलाका निकालता है । हम लोगों का एक तरह से यही रोजगार है । दारु... शराब बेच कर ही तो हम अपनी जरुरतें पूरी कर रहे हैं । वरना हमारी आमदनी क्या है ? शराब बेचकर ही... हम अपनी जरुरतें पूरी कर पा रहे हैं । अगर इसे बंद कर दें... तो पहनेगे क्या ? खायेंगे क्या ?” किसी का स्वभाव, उसके चरित्र की चुगली करता है । यहां तो सबकी सोच एक सी थी, बल्कि एकमुखी ।

वर्तमान में जीते थे । आगे -पीछे भविष्य के बारे शायद अधिक सोचते- विचारते नहीं थे । दूरदर्शिता शायद थी नहीं ?

'दारू... शराब की बात तो मैं नहीं जानता हूं । लेकिन आप दोनों के बीच तो असली झगड़ा इस बात पर है कि रुपये पैसे बरवाद हो रहे हैं । यानी... जुआ खेलने में वक्त भी बरवाद हो जाता है । रुपये पैसे भी जा रहे हैं । आपकी मेहनत बेकार चली जाती है । ये कह रहे हैं कि जुआ खेलना बंद कर दूंगा । ये इस बात को मान गए हैं । आप भी मान जाओ न । आप तो मेरी बहन जैसी हैं । आपको मैं गलत थोड़े ही कहूंगा ।" मनोहर ने पति -पत्नी के बीच में सुलह- समझौता करने के मद्देनजर दोनों पक्षों को समझाना चाहा ।

' नहीं जी ! ये झूठी कसमें खाते रहते हैं । अभी आपके सामने नहीं कह रहे हैं । कल को फिर शुरू हो जाएंगे ।"

' मैं बच्चों की कसम खाता हूं... अब जुआ नहीं खेलूंगा । पर अगर पैसे की कमी पड़ी... पहनने के लिए टाइम पर कपड़े ...झिकड़े न मिले... तो फिर कुछ मत कहना ।" कृष्ण मान तो रहा था, लेकिन सशर्त ।

' अच्छा जी... इसका मतलब है... आप जुए के पैसे से सब कुछ खरीदते हैं ? घर चलाते हैं ? मैं शराब निकाल कर देती हूं... तो कह देते हैं... फलाना जानकार मिला था । उसके साथ पी ली । यह भी कोई बात हुई ? शराब निकालना कोई नई बात नहीं है । बहुत से लोग यह काम कर रहे हैं । हम भी निकाल

रहे हैं... तो यह कौन सी अनोखी बात हो गई ?" रेशमु की अपनी सोच, अपने अनुभव थे । पैसे की कमी उसे भी खलती थी । इसलिए दारू निकालना मजबूरी समझती थी । यह गैर कानूनी है, इसे भी जानती थी ।

' मैं जुआ बिल्कुल नहीं खेलूंगा । कोई तंगी हो... तो नहीं कहना । हो सकता है फटे कपड़े पहनना पड़े । नमक के साथ खाना पड़े... फिर मत कहना कुछ ।" कृष्ण ऐसे कह रहा था मानो जुए के कारण ही घर चल रहा हो । जुआ न खेले, तो भुखमरी हो जाए । यह उनका प्यार जताने का तरीका था या तकरार, पता नहीं ? लेकिन मनोहर को ऐसी बेतुकी बातों, बेढंगे तर्कों, बचकानी

बल्कि भोली सोच को जानकर हंसी नहीं आ रही थी, बल्कि हैरानी हो रही थी । लेकिन वह अपनी हंसी और हैरानी को दबाए, उन्हें बच्चों जैसे वाद -विवाद करते देख रहा था ।

' ऐसी नौबत नहीं आएगी । मैं क्या जानती नहीं हूं ? सब कुछ सहन कर लूंगी । पर... आपको इस से दूर रहना होगा । शराब पीने के बारे नहीं कहती । लेकिन यूं ही किसी को पिला दे... या खुद पीकर खत्म कर दे... मैं इसे बर्दाशत नहीं करूंगी ।" रेशमु की अपनी ही अजीब सी सोच थी । अनोखी समझ थी ।

विभिन्न प्रकार के हरियाले पेड़ों, वृक्षों की झुरमुट से घिरा गांव, सर्पीली पगडंड़ी के ऊपर टीले जैसी जगह में बसा था । पहाड़ी के नीचे खुला और समतल स्थल था । यहां से उछलती, मचलती ब्यास नदी ने कस्बे को दो हिस्सों में विभाजित कर रखा है । गांव से नीचे छोटा सा हवाई अड्डा बिल्कुल नजदीक था । हवाई अड्डे के साथ- साथ कुछ और भी ऑफिस आदि थे । इनमें काम करने वाले कर्मचारी कच्ची देसी शराब पीने के बहुत शौकीन थे । अगर यह कहें कि शराब पानी की तरह पीते थे, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी ।

आस- पास के गांवों में भी कोई न कोई, चोरी छिपे कच्ची शराब की ऐसी भट्टी चलाता ही था । सभी को इसकी जानकारी रहती थी । लेकिन कोई कुछ नहीं बोलता था । इस मायने में गांव में खूब एकता और आपसी समझदारी थी । सब अपने अभावों को इस प्रकार पूरा करने की कोशिश करते थे । कृष्ण का घर दूसरे गांव में था । रेशमु ने अपने घर के पास खेत के एक कोने में भट्टी जैसा बना रखी थी । अक्सर वहीं शराब निकालती थी । खमीर का पीपा भट्ठी पर चढ़ाती । कैनों में भरती । कृष्ण कैन से

बोतलों में भर, पीठू झोले में डालकर उन्हें बाज़ार को ले जाता । सबको पता रहता । झोले में क्या है ?

पहाड़ों का जीवन कठिन था । गांव के लोग ऐसे काम शायद इसलिए भी करते थे क्योंकि पथरीले - कंकरीले सीढ़ीदार खेतों में मकई और राजमा, माश (उड़द दाल) के अतिरिक्त दूसरी फसल कुछ

अधिक होती नहीं थी । पानी की सुविधा थी नहीं । बारिश ठीक- ठाक हो, तो फसल ठीक होती

अन्यथा तो निराशा ही हाथ लगती थी । इसलिए अधिकांश लोग इस प्रकार के काम- धंधों में लिप्त थे । कुछ औरतें जंगल से लकड़ियां काट, पेड़ों की हरी- सूखी टहनियां -डालियां तोड़, गट्ठर बना अपनी पीठ पर लादे, नीचे बाज़ार के ढाबों, होटलों में उन्हें जलावन के तौर पर बेच आती । तुरंत मिले नकद पैसों से सौदा -सुलफा के रूप में चाय- पत्ती, नमक, तेल, हल्दी, सस्ते क्रीम- पाउडर, प्लास्टिक की चूडियां- बंगड़ियां आदि खरीद लेती । पैसे बच गए, तो बच्चों के लिए मिठाईयां भी । वापसी में उनके हाथों, कंधों या पीठ पर रोजमर्रा की इन वस्तुओं की गठरी - पोटली होती ।

दूसरे गांवों के भी कुछ लोगों का जैसे यही मुख्य काम बनकर रह गया था । कच्ची शराब निकालना, बेचना । और यदि बिकने से रह जाए, तो खुद ही पी जाना । पीकर घर में, गांव में हो - हल्ला मचाना । दारू के नशे में मदहोश बने, कभी- कभी एक दूसरे से मार-पीट भी कर लेते । लेकिन नशा उतरने के बाद, पहले की तरह ही फिर से सामान्य हो जाते । जैसे कुछ हुआ ही नहीं था !

' देखो कृष्ण ! देखो रेशमु बहन ! आप दोनों की अनबनी की असली वजह जुआ है । कृष्ण जी जब कह रहे हैं... जुआ नहीं खेलूंगा... समय पर घर पहुंच जाऊंगा... आपकी सभी बातें मानने को तैयार भी हैं । अब आप भी कुछ सोचिये । पति- पत्नी के बीच आपसी समझ बहुत जरूरी है । मुझसे ज्यादा आप जानते... समझते हैं । जिंदगी की गाड़ी समझौतों से ही चलती है । आपके तीन बच्चे हैं । इनके बारे सोचें । घर को खाली रखकर आप दोनों यहां आए हुए हैं । यह कोई अच्छी बात नहीं । मेरी माने... तो आप दोनों कल सुबह बच्चों को साथ लेकर घर चले जाएं । आपके परिवार वाले सभी खुश होंगे ।" गोया शराब, दारू निकालना, बेचना कोई मुद्दा ही नहीं था । जुआ आपसी झगड़े का मुख्य मुद्दा बन गया था । सरल हृदय, सरल माहौल । चालाकी - चतुराई जैसी कोई सोच नहीं थी । सीधी -सरल बोली, स्पष्टबयानी ! मनोहर क्या बोलता ? लेकिन फिर भी उसने दोनों को ऐसे समझाया, मानो वे कोई छोटे -छोटे बच्चे हों, और वह उनका अभिभावक । हालांकि उम्र और अनुभव में, वह दोनों से छोटा ही था । उनके मन- मुटाव, तकरार को खत्म करने के लिए इस समय उसे यही कहना ठीक

‘ क्यों अंकल जी ! मैंने कुछ गलत तो नहीं कहा ?” मनोहर ने अपनी बात की पुष्टि करनी चाही । उसने किसी पहुंचे हुए राजनीतिक नेता की तरह कृष्ण के ससुर और रेशमु के पिता से हामी भरनी चाही । उसे अपने पर आश्चर्य भी हो रहा था । वह ऐसी बातें शायद ही करता था । वैसे भी, इस तरह के मुद्दों, घटनाओं, समस्याओं या पति -पत्नी जैसे नाजुक एवं संवेदनशील रिश्तों के अहं को सुलझाना- सुलह- समझौता कराने का यह उसका पहला ही अनुभव था । पर उसे स्वयं को लगा, ऐसे अवसरों पर कहे जाने वाले रटे रटाए शब्दों, संवादों को जैसे उसने दोहरा भर दिये हैं । लेकिन परिवार के लोग उसकी बातों और समझाइश से सहमत लग रहे थे । इसका प्रमाण यह था, किसी ने उसकी बात को काटा नहीं था । बीच में टोका नहीं था ।

‘ चलो ठीक है ! ये दोनों कल सुबह खाना... वाना खाकर अपने घर चले जाएंगे । चाहें तो... बच्चे यहां छोड़ दें । चाहें तो... साथ ले जाएं ।” अपने तेवरों में ढीले पड़ गए बेटी- दामाद दोनों की ओर से खामोशी को सहमति मान, कृष्ण के बुजुर्ग ससुर ने अपना निर्णय सुनाते हुए कहा । हंगामे की आशंका के विपरीत, घर की अन्य महिलाएं आश्चर्यजनक रूप से चुप थीं । किसी ने भी कुछ नहीं कहा था । कोई टिप्पणी नहीं की थी । रेशमु के होंठ अब जैसे सिल गए थे । लेकिन आंखों में नमी उतर आई थी । मनोहर को उनकी खामोशी पर हैरानी हो रही थी । उसने कुछ क्षण उन सबके चेहरों की ओर देखा, और फिर ‘ अच्छा... मैं चलता हूं ।” कह कर कमरे से बाहर निकल आया । कृष्ण वहीं रह गया था । अब तक रात के बारह बजे का समय हो चुका था । बाहर रात की कालिमा को ऊपर साफ आसमान में चमकते चांद – सितारों ने उजाले में बदल कर रख दिया था ।